thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : ३३ ● २ सितम्बर, २०१४ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

मनुष्य की सर्वोच्च उपाधि भगवान है

-खुशहाल चन्द्र आर्य
कोलकता

आर्य समाजी जब राम और कृष्ण को भगवान कह कर सम्बोधित करते हैं तब मेरे पौराणिक भाई यह समझते हैं कि आर्य समाजी भी राम और कृष्ण को भगवान मानते हैं, यानि ईश्वर मानते हैं। पर ऐसी बात नहीं है, राम कृष्ण, बुद्ध, महाबीर, आदि शंकराचार्य, दयानन्द आर्य जिनके पहले हम भगवान शब्द का प्रयोग श्रद्धा व सम्मान के साथ करते हैं। ये सब ईश्वर नहीं महापुरूष थे। भगवान तो उनकी उपाधि या पदवी है- जैसे- महाशय, महात्मा, संत, ऋषि व महर्षि आदि होती हैं ठीक भगवान भी एक उपाधि है। परंतु भगवान मनुष्य की सर्वोच्च व सर्वोपरि उपाधि है। जिसमें मानवता के अधिक से अधिक गुण विद्यमान हों, जो ऐश्वर्यशाली हो, जिनका पूरा जीवन निष्काम कर्म यानि अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि परोपकार के लिए जिया हो। जिसका खाना, पीना, सोना, बैठना आदि नित्य कर्म भी स्वार्थ की भावना से न होकर परमार्थ की भावना से हो। वह भोजन भी इसीलिए करता हो कि जिससे अधिक से अधिक समय तक जीवित रहकर मानव की ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र की अधिक से अधिक सेवा कर सकें। जिसकी प्रत्येक सांस और प्रत्येक पल भी परोपकार में लगा हुआ हो, अपने स्वार्थ के लिए नहीं। जिसमें मन, वचन, कर्म से कोई भी गलत काम अपने स्वार्थ के लिए न किया हो, जो बुद्धि, बल, ज्ञान, साहस, धैर्य, निष्पक्षता, त्याग, तपस्या व चरित्रता में भी बेजोड़ हो, ऐसे महापुरूष को भगवान कहा जाता है। यह पदवी किसी संस्था या सरकार से नहीं मिलती, यह पदवी तो उसके प्रशंसक लोग ही श्रद्धा व प्रेम से देते हैं। मेरा विचार है कि अवतार वाद की अवधारणा व मूर्ति पूजा का प्रारम्भ भी इसी भगवान के प्रयोग से ही हुआ है। मनुष्य का यह स्वभाव होता है, उसके मन में जो विचार होते हैं वे समय आने पर स्वयं ही वास्तविकता में परिणित हो जाते हैं। जब लोगों ने राम और कृष्ण को भगवान् के रूप में सम्बोधित करते देखा कुछ स्वार्थी और कम पढ़े लिखे ब्राह्मणों ने सोचा कि राम और कृष्ण ईश्वर के दो अवतार है इसीलिए तो भगवान कहते हैं। वैसे महापुरूष तो बहुत हुए है लेकिन राम और कृष्ण को ही भगवान् क्यों कहते हैं? औरों को क्यों नहीं कहते हैं? इसलिए उन्होंने राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार मान लिया और उनकी काल्पनिक मूर्तियां बनाकर पूजने व पूजवाने लगे और अपनी रोजी-रोटी का रास्ता बना लिया।

दूसरी बात यह भी है कि लगभग ढ़ाई हजार वर्ष पहले, जब देश में बौद्धों और जैनियों का प्रभाव बढ़ गया और बढ़ता ही जा रहा था, इसके पीछे भी उनके द्वारा की जा रही मूर्ति पूजा भी एक कारण था। तब हिन्दू पंडितों ने भी सोचा कि मूर्ति पूजा के कारण इनके अनुयायियों की संख्या बढ़ रही है तो हमें भी अपने भगवान राम और कृष्ण की मूर्ति बनाकर पूजा करनी चाहिए ताकि हमारे हिन्दू बौद्ध और जैन न बनें। उस समय वेद ज्ञान प्रायः लुप्त हो चुका था। यज्ञों में पशु बलि होने लगी थी। ईश्वर की सही उपासना, वैदिक संध्या, अष्टांग योग को लोग भूल चुके थे। सही ज्ञान के बिना निराकार ईश्वर की उपासना करना बडा कठिन है। ऐसी स्थिति में लोगों ने मूर्ति पूजा से ही ईश्वर की उपासना करना सरल समझा और हिन्दुओं में मूर्ति पूजा का प्रचलन हो गया। इससे तत्कालीन लाभ तो यह हुआ कि हिन्दुओं का बौद्ध और जैन बनना कम हो गया। परंतु भविष्य के लिए यह बड़ा दुखदायी सिद्ध हुआ।

मानव मात्र का कल्याण करने के लिए उन्नीसवी शताब्दी में देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने शिवरात्रि के दिन शिव की पिण्डी पर चूहों को उछलते कूदते देखा और प्रसाद खाते देखा तब दयानन्द जिनके बचपन का नाम मूलशंकर था, को मूर्ति की जड़ता का ज्ञान हुआ। उसके बाद उन्होंने अपने चाचा और बहन की मृत्यु देखी, तब उनको वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे बाईस वर्ष की आयु में घर छोड़कर चले गये। उन्होंने पूरे देश का भ्रमण करके देश में फैले अज्ञान, अंधविश्वास और पाखण्ड को अपनी आँखों से देखा। पण्डे-पुजारियों को धर्म के नाम पर अधर्म करते देखा तो वे इसका निदान ढूँढने के लिए विचलित हो उठे। ईश्वर की कृपा से व भटकती मानवता के भाग्य से किसी ने इनको व्याकरण के सद्गुरू विरजानन्द के पास भेज दिया, जिनके ऊपर के चक्षु तो बन्द थे, पर हृदय पटल के चक्षु खुले थे। उन विरजानन्द ने वेदों की शिक्षा जो मानव को मोक्ष तक पहुँचाने की सही शिक्षा है देकर जिज्ञासु दयानन्द के चक्षु खोल दिये। दयानन्द ने सद्गुरू विरजानन्द के पास लगभग तीन साल विद्याध्ययन किया। इस बीच दयानन्द ने वेदों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। विद्या समाप्त होने के बाद जब दयानन्द गुरू विरजानन्द के पास कुछ लौंग लेकर गये तो गुरू विरजानन्द दयानन्द के गले में गला डालकर रोने लगे और कहा 'दयानन्द मैंने तुझे इस लौंग की दक्षिणा के लिए नहीं पढ़ाया था। तब दयानन्द बोले कि गुरू जी आपकी

क्रमशः.....6 पर

वेदामृतम्

ओ३म् उष्ट्रादेव फर्वरेषु श्रयेथे प्रायोगेव श्वात्र्या शासरेथः
दूतेवहिष्ठो यशसा जनेषु माप स्थातं महिषेवावपानात्।
ऋग-१०.१०६.२

अर्थ-हे दम्पति तुम दोनों जैसे भूख से व्याकुल साथ रहने वाले दोपशु (फर्वरेषु) घास के मैदान में आश्रम लेते हैं वैसे ही रागद्वेष काम दाह से पीड़ित हुये आध्यात्मिक भोजन के लिए जंगलों में स्थित महात्माओं का सत्संग करो। जैसे दो धनीमित्र (प्रायोगाश्वात्र्या इव) व्यापार एवं व्यवहार में धन का सफलता प्राप्त होने पर (शासुरेथः) किसी सिद्ध महात्मा के पास श्रद्धा से आशीर्वाद लेने जाते हैं वैसे ही तुम स्त्री पुरूष सन्तान धन की प्राप्त होने पर गृहस्थ धर्म के उपदेश करने वाले पुरोहित के पास जाकर मार्ग दर्शन लो। (दूतेह हि) जैसे दूत राजा को सन्देश पहुंचाकर उसने कृपा पात्र बनते हैं वैसे ही (यशसाजनेषुस्थ) तुम लोगों में यश कीर्ति से प्रिय बनो। (महिषाइव) जैसे भैंसे (अवयानात्) पानी के तालाब में जाकर बाहर आना नहीं चाहती वैसे ही तुम दोनों ज्ञानामृत पान से कभी पृथक न हो।

भावार्थ-गृहस्थाश्रम राष्ट्र निर्माण का कारखाना है जहां प्रत्येक बच्चों का निर्माण कर उन्हें राष्ट्र सेवा के लिए भेज दिया जाता है। जिस कारखाने में अच्छी मशीनें और कुशल कारीगर हो उसके उत्पादन सभी को पसन्द आते हैं ठीक इसी प्रकार मनुस्मृति में कहे अनुसार जितेन्द्रिय स्त्री पुरूषों को ही सुख की प्राप्ति के लिए गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

आचार्य स्वदेश
प्रधान/संरक्षक

भुवन तिवारी
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

...ाय.....

...्य बनकर राष्ट्र को संवारने का दायित्व निभायें

सदियों से पद दलित भारत माता के गौरव को प्रतिष्ठापित करने एवं मानवता की संरक्षा के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द ने आज से 139 वर्ष पूर्व- सम्वत् 1932 तदनुसार सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी और उसे आन्दोलन नाम दिया था। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्घोष करके समग्र मानवों को आर्य बनने और बनाने का संदेश दिया था।

महर्षि ने आर्य शब्द की परिभाषा करते हुए कहा था, कि जो मनुष्य विवेक के तराजू पर तौलकर कार्यो के निष्पादन में लगता है वह आर्य होता है, वह अपने लक्ष्य में पूर्ण होता है। उसका जीवन सफल होता है। वेद में मानव तन धारियों को 'मनुर्भव' का संदेश दिया है अर्थात् शरीर तो मानव का परमात्मा ने दे दिया है परंतु मानव धर्म का सही रूप में पालन करते हुए जीवन जियो। इस जीवन में कर्म करने की स्वतंत्रता तुम्हें प्राप्त है परंतु अपने कर्मो का विनियोजन "तन्तुन्तन्वन्रजसः भानुमन्विहि" के अनुसार दुनिया के सारे ताने बाने को अर्थात् अपने सभी कार्यो को सूर्य की भांति बिना किसी लाग लपेट के सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय करो तुम्हारे कर्मो के विनियोजन में स्वार्थ, अहंकार, लोभ, मोह, बाधक बनेंगे अतः "ज्योतिर्मतः पथःरक्षधियाकृतान" सदैव सजग रहो और पूर्वज दिव्य पुरुषों के नक्शे कदम पर चलते हुए ही जीवन जियो और सबको जीने का अवसर दो।

जीवन के मार्ग में अनेको उलझने आती हैं, बाधक बनती है। परंतु अनुल्वणं वयत जोगुवामपः" आने वाली उलझनों को पूर्वज ऋषि मुनियों की भांति सुलझाने का मार्ग अपनाओ, नई उलझनें पैदा करके उन्हें उलझाने की चेष्टा न करो। महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हमें यह वैदिक सन्देश अपने उपदेशों और ग्रंथों सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि के माध्यम से दिया था। महर्षि का यह सन्देश हमारे पूर्वजों ने सुना और आर्य बनकर सारे मानव समाज को आर्य बनने का लक्ष्य लेकर निकल पड़े अनेकों संकटों, यातनाओं को झेलते हुए भी अपने लक्ष्य में सफल होते गये। वेदानुरूप जीवन जीने का संकल्प रंग लाया। भारत माता की बेड़ियां काटने को जी मचल पड़ा, स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें आर्यो ने अपना सर्वस्व अर्पण करके उसे जीता और भारत को स्वतंत्र कराया। कांग्रेस के इतिहास में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री सीतारमैय्या ने लिखा है कि स्वराज्य आन्दोलन में 80 प्रतिशत आर्यसमाजियों ने अपना योगदान दिया।

आजादी के बाद आर्यो ने अपना दायित्व शायद पूर्ण मान लिया। क्योंकि संविधान में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को प्रच्छन्न रूप में पूरी तरह स्वीकार कर लिया गया था। आन्दोलन में शैथिल्य आया। पाश्चात्य संस्कृति में पले शासन की कुर्सियों पर बैठने वाले नेताओं से यह आशा की थी कि यह राष्ट्र को सुखी समृद्ध बनायेंगे। पाश्चात्य संस्कृति, भोगवादी जीवन सिखाती है जिसमें सुख को प्रधानता दी जाती है। जब कि भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक जीवन पद्धति सिखाती है जिसमें मानवता की संरक्षा का दायित्व लेकर निजी सुखों को ठुकराया जाता है।

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नेताओं ने भोगवादी दर्शन से राष्ट्र निर्माण के प्रयास प्रारम्भ किए। फलतः भौतिक समृद्धि भरपूर होने के बाद भी अशान्ति विग्रह नोच घसोट, भ्रष्टाचार, अनाचार, नारी उत्पीड़न से राष्ट्र टूटने लगा। हम आर्य समाज के सदस्य कर्णधार, नेता, सभासद भी सभवतः भोगवादी संस्कृति के प्रभाव में आकर अपने लक्ष्य से भटकने लगे।

आर्य समाज की स्थापना के साथ ही आर्य समाज के सार्वजनीय नियम महर्षि ने बनाये थे और उन नियमों को जीवन का लक्ष्य बताया था। जिनमें सम्पूर्ण सत्य विद्या का प्रकाशक परमात्मा को बताया और कहा कि एकमेव परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। सम्पूर्ण सत्य विद्या का प्रकाश वेद से ही होता है अतः सभी आर्यो को इसे पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने का निर्देश दिया। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के त्याग का आदेश देते हुए कहा कि जीवन में सभी कार्य सत्यासत्य धर्माधर्म का विचार करके ही करने चाहिए। जीवन का परम लक्ष्य उपकार करना ही होना चाहिए। सभी से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथोचित बर्ताव करने में संलग्न होना चाहिए। विद्या प्रसार और अविद्या के विनाश के लिए आर्य को सन्नद्ध रहना चाहिए। सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति जाननी चाहिए। सभी को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र तथा प्रत्येक हितकारी नियम में स्वतंत्र रहना चाहिए।

आज आर्य नियमों के विपरीत ही अपनी जीवन की विद्या बनाते जा रहे है। बहुत से आर्य समाज का सदस्य बनकर उसके सहारे अपने स्वार्थ की सिद्धि ही परम लक्ष्य मानने लगे हैं। एक समय था कि न्यायालय में यदि कोई आर्य किसी गवाही के लिए गया और अपना परिचय आर्य नाम से दिया तो न्यायाधीश उसके कथन को सर्वथा सही मानते थे। परंतु आज यह विडम्बना ही तो है कि आर्य समाजों के सर्वाधिक मुकदमें न्यायालयों में लंबित है। कभी आर्य समाज संगठन में आने वाला अपने जीवन की स्वयं कठिन परीक्षा लेकर आर्य सभासद बनने का प्रयत्न करता था और वह संगठन समाज के अन्दर व्याप्त बुराइयों के विनाश में तत्पर होता था। परंतु क्या कारण है कि आज देश में अनेकशः आर्य समाजों के संगठन में एकाधिकार बनाकर अपने को संस्था का अधिकारी बनाने के लिए न्यायालयों में गुहार लगा रहे है और मौका पाते ही एक दूसरे के चरित्र को गंदे रूप में प्रस्तुत करने में ही अपना हित देख रहे है। हमें पद लिप्सा, धन लिप्सा क्यों इतना पागल बना रही है। अगर ईमानदारी से अपने अन्दर झांककर देखेंगे तो पायेंगे कि हम आर्य नहीं अनार्य होते जा रहे हैं।

मानवता का सम्बर्धन अनार्य नहीं कर सकता उसके सम्वर्द्धन केलिए आर्य होना परमावश्यक है। परंतु जब आर्य नाम का चोला ओढ़ने वाले ही अनार्य हो जायें तो फिर कैसे लक्ष्य पूर्ण होगा। यह आर्य के लिए अत्यंत विचारणीय है। आर्य समाज के सदस्यों की संख्या बढ़ाने का उद्यम तब सही होगा जब सदस्य बनाने का लक्ष्य लेने वाले नेतागण महर्षि के मन्तव्यों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लेंगे और सदस्य बनाने के अभियान में चरित्र को सर्वप्रथम स्थान देंगे। जब पूर्ण प्रांजल जीवन हो जाये तभी सभासद बनाने का उद्यम करेंगे।

अन्त में मैं अत्यंत दुखी ह्रदय से आर्य समाज के सभी सदस्यों, अधिकारियों, पदाधिकारियों, नेताओं से विनम्र निवेदन करता हूँ कि आज हमारे द्वारा जाने या अनजाने में आर्य समाज को हानि पहुँचाने में बड़ा योगदान हो रहा है। अब जाग जायें, सचेत हो जायें, दूसरों पर कीचड़ उछालने के बजाय अपने अन्दर की दुरिता को मिटाने का संकल्प लें। सच्चा आर्य बने और सभाओं, समाजों, विद्यालयों के मुकदमों को न्यायालयों से उठा लें। निश्छल मन होकर आर्य समाज आन्दोलन को चलाने में सन्नद्ध हो। यदि हमने आत्म निरीक्षण की औषधि का प्रयोग अपने ऊपर आरम्भ किया तो निश्चय ही हमारे दुरित दूर होंगे। हम सच्चे आर्य बनेंगे और सच्चे आर्य बनकर सारे संसार को आर्य बनाने का उद्यम करेंगे और सारे विश्व में मानवता की संरक्षा करके विश्व को सुख शान्ति समृद्धि से परिपूर्ण बनाने में समर्थ होंगे और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को पूर्ण करके उनके सच्चे अनुयायी होने का गौरव प्राप्त कर सकेंगे।

सम्पादक

स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती

पं. श्री राम शर्मा आर्य सिद्धान्त विशारद

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज विश्व के महापुरूषों में सर्वोपरि स्थान रखते है। जिस समय इनका जन्म हुआ, उस समय भारत में अविद्या की घनघोर घटायें छायी हुई थी। हमारा देश उस समय अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भारतवासी अपने को हीन समझ रहे थे। अनाथ तथा विधवायें बिलख रही थी। नारी जाति अपमानित हो रही थी। धर्म का स्थान पाखंड़ों ने ले लिया था। लोग जड़ पूजा व नदियों में स्नान करने से ही मुक्ति मान रहे थे। (स्त्रीशूद्रो नाधीयताम् इति श्रुति) कहकर स्त्री व शूद्रों को विद्याधिकार से वंचित रखा जा रहा था। वेद विद्या लुप्त हो रही थी। एक ईश्वर का स्थान अनेक कल्पित देवी-देवताओं ने लिया था। सूर्य की किरण निकलने से पहले ही हजारों गौओं की गर्दनों पर छुरी फेर दी जाती थी। धर्म के नाम पर आडम्बर व कुरीतियाँ बढ़ रही थीं। महर्षि ने इन सभी समस्याओं को देखा। भारत की दीन-हीन अवस्था को देखकर उनका मन चीत्कार कर उठा। उन्होंने भारत की बिगड़ी हुई दशा को संवारने का प्रबल प्रयास किया। मानव मात्र के कल्याण हेतु वेद का सही स्वरूप हमारे सामने रखा। उन्होंने हमें मानवता का पाठ पढ़ाया। जाति-पाति, ऊँच-नीच, छूआ-छूत का मिटाकर मानव की एक जाति होने का पावन संदेश दिया। स्त्री तथा शूद्रों को विद्या का अधिकार दिलाया। सर्वप्रथम भारत में गो माता की रक्षा के लिए हरियाणा के रिवाडी नगर में गोशाला की स्थापना की। एक ईश्वर की चेतन उपासना पद्धति पर बल दिया। अनाथ बच्चों की उचित शिक्षा सहित सुचारू परवरिश पालन-पोषण के लिए पंजाब के फिरोजपुर नगर में अनाथालय खुलवाया। संसार की जन्मदात्री उस मातृशक्ति को जिसे ईसाई लोग पैर की जूती समझते थे सर का ताज बनाया।

भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियों को काटने के लिए अपने पटु शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंग्लैंड भेजा। जिन्होंने महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के स्वराज्य एवं उसके छठें समुल्लास में वर्णित सुराज्य को भारत में स्थापित करने हेतु दिलोजान से काम किया। कर्जन वाइली को मौत की सजा देने वाले मदनलाल डींगरा, जलियांवाला बाग काण्ड के हत्यारे को मारने वाले शहीद ऊधम सिंह को रिवाल्वर श्याम जी कृष्ण वर्मा से ही मिली थी। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाली बहन राम रक्खी व उनके पति भाई बाल मुकुन्द, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, हरदयाल, लाला लाजपत राय, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार किशन सिंह, सरदार भगत सिंह, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल और उनके सभी साथियों ने महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित होकर देश को स्वतंत्र कराने के लिए अंग्रेजों से टक्कर ली और भारत माता को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराया। महर्षि के तपोबल से ही देश में एक नई चेतना आई।

-ग्राम राजारामपुर, मण्डावर,
बिजनौर (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

डी.ए.वी. इण्टर कालेज मीरापुर इलाहाबाद के शताब्दी महोत्सव के कतिपय चित्रों की झलकियां

दिनांक 17.7.2014

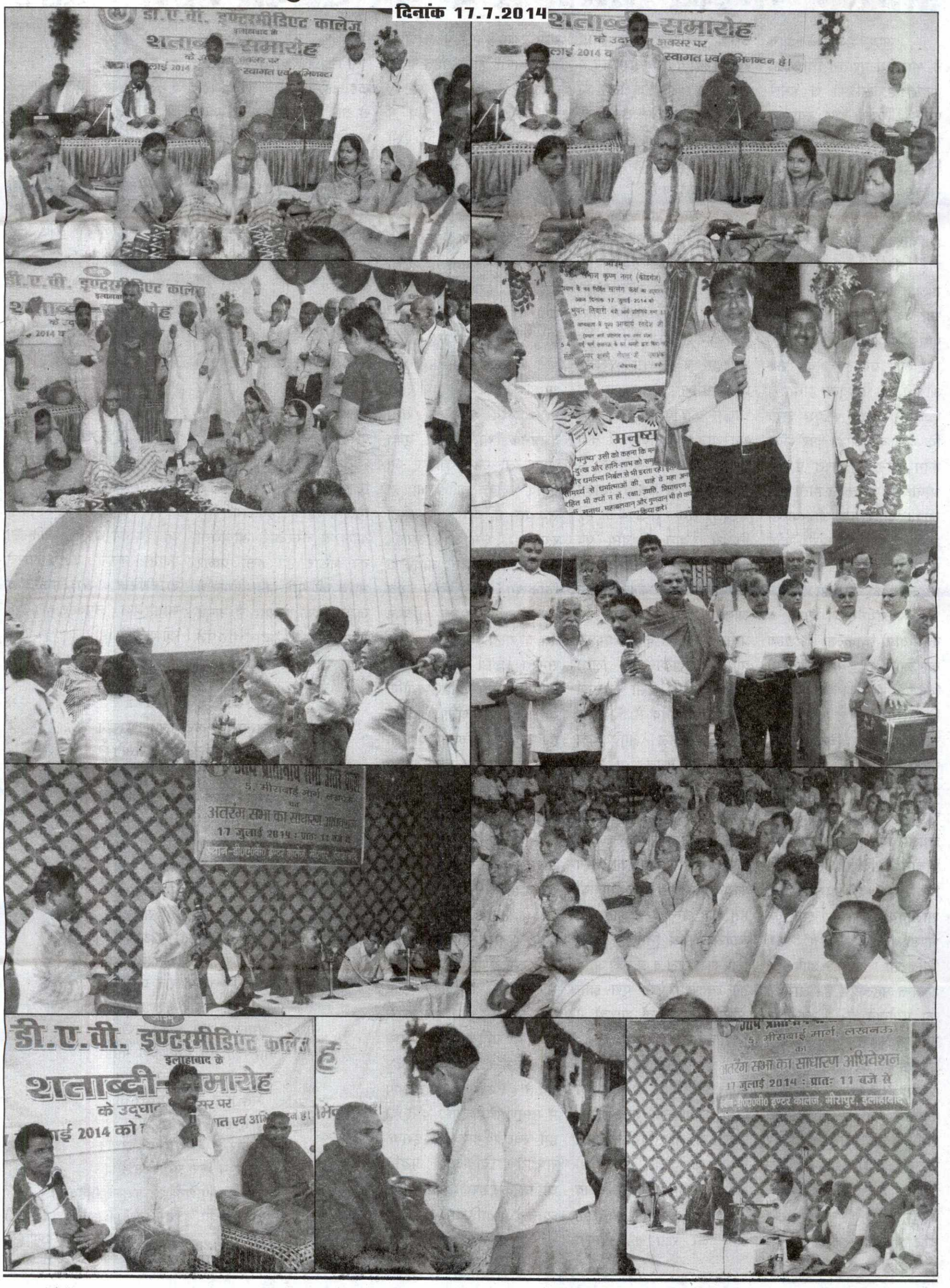

thearyasamaj.org

आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित होनी चाहिए

डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह
खुर्जा

आयुर्वेद आयु का ज्ञान है, भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति है, सदियों से हमारे पूर्वज आयुर्वेद द्वारा स्वास्थ्य लाभ लेते रहे हैं। यह चिकित्सा जीवन के साथ सात्म्य है और आसानी से प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध भी है। चारों ओर फैली हरियाली, जड़ी-बूटियां, नदी, सरिता, तालाब, मिट्टी, वायु भांति भांति के वृक्ष, लताएं, फल व पुष्प पौधों के मूल जो भी हमारे चाों ओर प्रकृति है वह सब औषधि रूप में प्रयुक्त होती है। एक बार जीवक से पूछा गया कि देख कर आओ चारों ओर कौन कौन सी वस्तु है जो औषधि में प्रयुक्त न होती हो। जीवक बाहर गया और वापस आकर बोला कि ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो औषधि में प्रयुक्त न की जाती हो।

आयुर्वेद में शल्य व काय दोनों चिकित्सा है। शल्य का ज्ञान तो भारत से ही विदेशों में गया था। काम चिकित्सा में काष्ठ औषधि एवं रस औषधि द्वारा चिकित्सा की जाती है। शरीर की रचना में अस्थि, स्नायु, मांसपेशी, रक्त संचार, हृदय, उत्सर्जन, चयअपचय आदि का पूर्ण ज्ञान प्राचीन चिकित्सा शास्त्रों में दिया गया है। प्रसूति स्त्री शालावय संबंधी पूर्ण ज्ञान का भण्डार है। पञ्च कर्म चिकित्सा अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद का प्रयोजन है- ' स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम आतुरस्य रोग प्रशनम च ' चरक संहिता

अर्थात् " स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और जब रोगी हो जाये तो रोग को दूर करना। यही आयुर्वेद का प्रयोजन है। इसीलिए आयुर्वेद सम्पूर्ण आयु की रक्षा हेतु है, यदि व्यक्ति स्वस्थ है तो उसके स्वास्थ्य का ध्यान रखना आयुर्वेद का प्रयोजन है केवल मात्र रोगी के लिए ही नहीं यह पद्धति रोगी की चिकित्सा के साथ ही स्वस्थ्य व्यक्ति का भी ध्यान रखना इसका उद्देश्य है।

हमारी दिनचर्या का इसमें समुचित ज्ञान है प्रातः उठना उठ कर ईश्वर का ध्यान नित्य कर्म शौच स्नान दन्त धीवन किस ऋतु में किस प्रकार का जल स्नान हेतु अवस्था का भी ध्यान रखना, प्रातः भ्रमण, योगाभ्यास एवं भोजन की विधि। ऋतु रोग अवस्थानुसार भोजन में क्या उचित है क्या अनुचित है विरूद्धाहार से बचना चाहिए रात्रि में शयन शैया कैसी हो, निवास स्थान में वायु एवं प्रकाश की आवश्यकता, अग्निहोत्र आदि करना उसमें औषधीय द्रव्यों आदि का प्रयोग , निवास का वातावरण पवित्र, सुखकारी व लाभ दायक हो। ऐसी सम्पूर्ण व्यवस्था आयुर्वेद में हैं। नगर से जल मल आदि का निष्कासन, प्रयुक्त व वर्ज्य पदार्थो का नगर से दूर पहुँचाव जिससे मानव को हानि न हो। नगर की स्वच्छता जैसे स्वास्थ्य व्रत का ज्ञान आयुर्वेद में हैं। नगर वासियों हेतु शुद्ध अन्न वस्त्र आदि की व्यवस्था, पथ निर्माण, उनके लिए शुद्ध जल व औषधि आदि की व्यवस्था ऐसा पूरा ज्ञान आयुर्वेद व वैदिक शास्त्रों में दिया है।

जो आयुर्वेद जन्म से लेकर अन्त तक व नगर की सभी व्यवस्थाओं का ध्यान रखती हो, जो सदियों से हमारे पूर्वजों के जीवन की साथी सहगामी रही हो जिसमें मानव व जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान हो, आयु की रक्षा की सम्पूर्ण सामग्री हो जो हमें परजीवी नहीं बनाती, हानि रहित सर्वत्र उपलब्ध है, आज भी घर घर में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती रहती है, ऐसी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति का स्थान देना चाहिए।

अब देश स्वतंत्र है आयुर्वेद हमारी मात्र चिकित्सा पद्धति है, इसकी ओर ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक नगर में आयुर्वेद के बड़े चिकित्सालय होने चाहिए, जहां बड़े बड़े आयुर्वेद के विशेषज्ञ हो। साथ में आयुर्वेद में ऐसी सभी वैज्ञानिक साधनों से युक्त सेवाएं ली जानी चाहिए जो मानव जीवन की रक्षा से संबंधित है जैसे कि सीटी स्कैन, एम.आर.आई. पैथालोजी जांच आधुनिक चिकित्सा के सभी यंत्र उपकरण, आई बव सूचिका बेध व शल्य चिकित्सा संबंधी समस्त कार्य आयुर्वेद के अन्तर्गत होना चाहिए क्योंकि यह सब उपलब्धियां वैज्ञानिक हैं। किसी चिकित्सा प्रणाली विशेष की न होकर मानव रक्षा हेतु है मानव रक्षा में प्रयुक्त प्रत्येक सुविधा आयुर्वेद के लिए होनी चाहिए जिससे भारत का जनमानस स्वस्थ व सुखद हो।

मानव के स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद सर्वोत्तम चिकित्सा प्रणाली है, आयुर्वेद से हम चारों ओर फैल रहे व नित नए नए होने वाले अन्य रोगों का प्रतिकार कर मनुष्य को अच्छा स्वास्थ्य प्रदान कर सकते हैं। आयुर्वेद अपने आप में सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। हमें स्वतंत्र भारत में इसको राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित कर इसके विकास पर ध्यान देना चाहिए।

भारत की भूमि पवित्र है गंगा जैसी पवित्र नदियां यहाँ है, जिसे भारतवासी माता कहते हैं, हिमालय पर्वत जहां से सदियों से शुद्ध पवित्र जल प्रवाहित होता रहता है चारों ओर असंख्य वृक्ष, पुष्प, पत्र लताएं भांति भांति के रंगों से सुशोभित हो रहे है। हिमालय जड़ी बूटियों का समुन्द्र है अनेक असाध्य रोगों की औषधियां यहां पर है। औषधियां अपने चमत्कारी प्रभाव से युक्त है। हनुमान जी यहीं से सुषेन वैद्य द्वारा बताई गयी संजीवनी लेकर गए थे। आज भी अनेक ऋषि यहां जड़ी बूटियों की खोज करते रहते हैं। कोई भी रोग नहीं जिसकी औषधि यहां न मिलती हो। हिमालय चिर काल से चमत्कारी औषधियों का भंडार है। इसी प्रकार भारत की भूमि जहां जंगल है जड़ी बूटियों के स्रोत है, समुद्र में भी औषधीय पदार्थ भरे पड़े है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत में आयुर्वेद से सम्बन्धित समस्त औषधि द्रव्यों का बड़ा भारी भंडार है जिसमें अनेक बड़े बड़े औषधि निर्माणशाला बना संसार का भला कर सकते हैं। भारत विश्व में आयुर्वेद औषधि निर्माण कर सबसे बड़ा केन्द्र बन सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम दूसरों पर निर्भर न रहकर अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। ईश्वर ने हमें अथाह प्राकृतिक सम्पदा दी है वैदिक ज्ञान दिया है, आयुर्वेद दिया है उसका उपयोग कर स्वयं स्वस्थ रह सकते है। बस आवश्यकता है आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति बनाने की, जिससे शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उपकार हो विश्व का कल्याण हो।

मंत्र गीत-

"पीयूष पात"

गलखार न कर गलहार सखे।
अंगार न कर श्रृंगार सखे।।
सूर्य लोक रश्मियाँ बिखरती
भूमि लोक तेजोमय करतीं
सौभाग्य सृजन होता जाता
यह प्रभु की गति संगति वरतीं।
स्वीकार ईश उपकार सखे।
अंगार न कर श्रृंगार सखे।
शुभ सप्त स्रोत की सरितायें।
प्रेरणा बहाती ये आयें
उनके सुख सौरभ सिंचन से
संताप नशाते सब जायें।
सुखधार न कर मझधार सखे
अंगार न कर श्रृंगार सखे।।
नासिका नेत्र मुख कर्ण गात।
आमोद बहाते स्रोत सात
मत इन्हें बनाये दुर्व्यसनी,
तू होने दे पीयूष पात
अपकार न कर खूँखार सखे।
अंगार न कर श्रृंगार सखे।।

मंत्र- शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते।
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहस।। (अथर्व 14.2.45)

देव नारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़, 202001 (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

स्व. स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ

विद्या-विलास-मनसोधृतशील-शिक्षा, सत्यव्रता रहितमान मलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये, धन्या नराः विहित-कर्म-परोपकारिणः।।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

जिन पुरूषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता है, सुन्दर शील स्वभाव युक्त, सत्यभाषणादि नियम पालनयुक्त और जो अभिमान एवं अपवित्रता से रहित, अन्य मलिनता के नाशक, सत्योपदेशक, विद्यादान से संसारी जनों के दुखों को दूर करने से सुभूषित, वेद विहित कर्मो से पराये उपकार करने में रहते हैं वे धन्य है। ऐसे ही थे हमारे श्रद्धास्पद गुरूदेव, वेदों के प्रामाणिक विद्वान, कर्मकाण्ड के अधिकारी, वक्ता, शास्त्रार्थ महारथी, कुशल वैद्य, कुशल प्रबन्धक, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, मृदुवाणी के अधिपति, आध्यात्मिक साधना के साधक, उच्चकोटि के प्रशिक्षक आचार्य, चेहरे पर ब्रह्मचर्य की आभा से प्रभावित उच्च भाल, देदीप्यमान ओज-तेज के धनी, गैरिक वस्त्रों की आभा से उसे द्विगुणित शोभा बढ़ाने वाले, सन्यासियों में वयोवृद्ध, अनुभववृद्ध, ज्ञानवृद्ध शिरोमणि, आर्य समाज हापुड़ को केन्द्र बनाकर आस-पास के ग्रामों में वेद प्रचार से ऋषिऋण को उतारने में सजग प्रहरी की तरह संलग्न आचार्यप्रवर स्व. स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ के नाम से सुविख्यात थे। आर्य जगत् में आज भी आर्यजन आपको सम्मान एवं श्रृद्धा से स्मरण करते हैं। एक बार जिसने भी आपकी पवित्र मृदु वाणी का श्रवण कर लिया वह सदा के लिए आपका प्रिय शिष्य भक्त बन गया। मुझे स्मरण आ रहा है कि जब आप ग्राम ततारपुर में 1962-63 में वेद प्रचारार्थ आये थे। आपके वेद प्रवचन सुनकर पूरा गाँव आपका अनुवर्ती बन गया था। उसी का परिणाम हुआ गुरूकुल महा.वि. ततारपुर की स्थापना।

स्वामी जी ने कभी भी अपना जन्म स्थान एवं परिचय नहीं बताया लेकिन बहुत प्रयास करने के पश्चात् विदित हुआ कि अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत में लाहौर के निकट दक्षिण दिशा में स्थित पलाखू नामक नाले के निकट एक ग्राम है जहां सम्वत् 1966 में ज्येष्ठ सुदी तृतीया को वैदिक धर्म में विश्वास रखने वाले परिवार में आपका जन्म हुआ। आप बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति के रहे हैं। आपके चाचा जी गुरूकुल कांगडी के उत्सव में जाते थे। अतः परिवार में आकर उत्सव का सारा आंखों देखा हाल सुनाते थे। उसी का प्रभाव हुआ कि आपको गुरूकुल में पढ़ाने का निश्चय किया गया। आर्य समाज के इतिहास में वीर संन्यासी लब्ध प्रतिष्ठित स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के चरणों में बैठकर लाहौर के उपदेशक विद्यालय में आपको पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तत्पश्चात् इन्दौर में वेद-वेदांगों का अध्ययन किया तथा तीन वेदों से कलकत्ता विश्व विद्यालय से तीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण कर त्रिवेदतीर्थ कहलाये। आपका पूर्व नाम पं. रामप्रताप तितिक्षु है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की आदर्श-मर्यादाओं के प्रताप से तितिक्षु बनने की उत्कंठा ने ही आपको तीर्थ बना दिया और तीर्थ्ज बनकर आर्यो को तारने का संकल्प लेकर समाज सेवा का व्रत धारण कर लिया। आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए आपने भारत विभाजन के पश्चात् आर्य समाज हापुड को केन्द्र बनाया और प्रचार प्रसार में पूर्णतया समर्पित हो गये। 1 नवम्बर 1951 को आर्य समाज हापुड़ के पुरोहित (आचार्य) पद पर प्रतिष्ठित हो अपने समय का सदुपयोग किया और वर्ष 1951-52 में आर्य समाज के सर्वोच्च विद्वान संन्यासी प्रसिद्ध लेखक स्वामी वेदान्त जी तीर्थ से संन्यास आश्रम में प्रवेश करके स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। आर्य समाज हापुड़ में रहते हुए आपने मअन स्वाध्याय किया, पुस्तकों का लेखन किया, पारिवारिक यज्ञों की परम्परा को स्थापित किया, जो अन्त तक चलता रहा। ग्रामीण वेद प्रचार योजना को प्रारम्भ किया। सांयकाल एक भजनोपदेशक को साथ लेकर जाना और रात्रि में प्रचार करके वापिस आकर आर्य समाज में ही विश्राम करना ताकि प्रातःकालीन दिनचर्या सुव्यवस्थित रह सके। इस प्रकार आस पास के लगभग 20 ग्रामों में स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना करके वेद प्रचार को व्यवस्थित किया। बाद में स्वामी जी बाहर जाने लगे तो यह क्रम व्यवस्थित न रह सका। स्वामी जी पूरे देश में वेद प्रचार सप्ताह एवं वेद कथाओं में जाने लगे। कलकत्ता, हैदराबाद, मुम्बई, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि चारों ओर आपकी ख्याति फैल गई और आप आर्य जगत के प्रथम श्रेणी के वक्ताओं में प्रसिद्ध हुए। इसी बीच हिन्दी रक्षा आन्दोलन चल पड़ा। पूज्य स्वामी जी ने उसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और आन्दोलन को सफल बनाया। उन्हीं दिनों यमुनानगर उपदेशक महाविद्यालय में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया जहां वर्तमान में लब्धप्रतिष्ठित विद्वान पं. रामप्रसाद वेदालंकार, श्री सत्यव्रत जी राजेश, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी वरूणावेश, जगदीश चन्द्र बसु जैसे होनहार छात्रों को आर्य जगत के लिए तैयार किया। आपका पढ़ाने का सुनियोजित क्रम सभी छात्रों को प्रभावित करता था। कुछ दिनों के लिए आप भटिण्डा (पंजाब) के गुरूकुल में भी आचार्य रहे। फिर वहां आचार्य सुदर्शनदेव जी को कार्यभार देकर वापिस हापुड़ आ गये। इन्हीं दिनों स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती, आचार्य भगवानदेव जी एवं पं. जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती से आपकी घनिष्ठता बढती चली गयी। राम गोपाल शाल वाले और पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी को आने का निर्देश देकर आर्य जगत को दिव्यता प्रदान की। हापुड़ आने का बाद आपका व्यापक स्वरूप परमात्मा के पिंजरे में कैद नहीं रह सका। हापुड़ में भी आपने क्रान्तिकारी कदम बढ़ाये और आर्य कन्या पाठशाला जो आर्य समाज मंदिर में चलाने की बात चल रही थी पृथक से स्थान निश्चित कर अधिकारियों को तैयार किया जो आज डिग्री कालेज तक विशद भव्य रूप में प्रकाशित हो रही है। इसका मूलरूपेण श्रेय श्री पूज्य स्वामी जी को ही जाता है। आर्य समाज मंदिर में आपने उपदेशक महाविद्यालय प्रारम्भ किया जिसमें शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. अमर सिंह जी अरनियां (बुलन्दशहर) को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। यहां पर आपने कितने ही योग्य स्नातक तैयार किए जिनमें डॉ. विक्रम सिंह शास्त्री, श्री वीरपाल विद्यालंकार, पं. बुद्धदेव जी जैसे उपदेशक आर्य समाज की शोभा बढ़ा रहे हैं। आपका यह अभियान और आगे बढ़ा तथा हापुड़ से 5 किलोमीटर पूर्व में गढ़ मार्ग पर ततारपुर ग्राम में "व्यास विद्यापीठ" के नाम से आश्रम उपदेशक विद्यालय के रूप में स्थापित कियाजो बाद में जाकर गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर नाम से विख्यात हुआ। पूज्य स्वामी जी का ही पुण्य प्रताप है जो यह गुरूकुल उ.प्र. सरकार द्वारा प्रथम श्रेणी में वर्गीकृत है। आचार्य कक्षा पर्यन्त मान्यता प्राप्त है। यहां से सैकड़ो योग्य स्नातक बनकर आर्य समाज की विविध क्षेत्रों में सेवा कर रहे हैं। जिनमें डॉ. वेदपाल जी बडौत, डॉ. दिनेश जी गुरूकुल कांगड़ी, डॉ. नरेन्द्र जी हैदराबाद, डॉ. विश्वपाल जी सिम्भावली, डॉ. धर्मपाल जी (स्वामी धर्मेश्वरानन्द) स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी वैदिक आदि मुख्य है। सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली में धर्माद सभा के अध्यक्ष पद पर सुशोभित रहे एवं श्रीमद् दयानन्द आर्य विद्यापीठ गुरूकुल झज्जर के आप उप कुलपति पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपने लेखन कार्य को प्रचार के साथ साथ महत्व प्रदान किया है। आप कर्मकाण्ड के तलस्पर्शी विद्वान थे, आप शंका समाधान, नमस्ते प्रकाशिका, विवाह में चार प्रदक्षिणाएं ही क्यों? स्त्री और शूद्रों को यज्ञोपवीत का अधिकार, मूर्तिपूजा, यज्ञपात्र, यज्ञों में हमारी भूलें, कन्या दान और घर का खानपान इत्यादि कई ग्रंथों का लेखन किया। संस्कार विधि पर आपकी टिप्पणी अति महत्वपूर्ण है। तथा नमस्ते प्रकाशिका पुस्तक सर्वाधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुई। आपके विद्वतापूर्ण एवं शोधपूर्ण लेख आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं जो आर्यजनों में प्रेरणा एवं ज्ञान का संचार करते रहे हैं। जीवन के अन्त तक स्वामी जी का स्वाध्याय चलता रहा। लेखन कार्य अन्तिम वर्षो में बन्द कर दिया था। बोलकर लिखवा लेते थे।

आयुर्वेद पर भी आपका पूर्ण अधिकार था। आपकी हस्तलिखित संचिकाओं में विभिन्न बीमारियों की चिकित्सा के नुस्खे लिखे हुए सुरक्षित हैं जिन्हें कभी समय आने पर प्रकाशित किया जायेगा। आपने अपने स्वास्थ्य के लिए अनुभूत प्रयोग किए, वर्षो तक कल्प क्रिया की और अपनी

क्रमशः.....7

thearyasamaj.org

पृष्ठ-1 का शेष.....

इच्छा क्या हैं, बता देवें? शिष्य अपना जीवन देकर भी आपकी इच्छा पूर्ण करेगा। तब गुरू विरजानन्द बोले- दयानन्द सब जगह अज्ञान, अंधविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला है, वेदों को लोग भूल चुके हैं और पण्डे पुजारी अपने स्वार्थ के लिए अधर्म को धर्म बताकर भोली भाली जनता को लूट रहे हैं। निर्धन, निर्बल, असहाय व दुखी लोगों का कोई सहारा नहीं है, तू उनका सहारा बन, तू बेटा, देश में वेदों के ज्ञान का प्रचार कर और लोगों को वेद पथ पर लाकर लोगों को मोक्ष पाने का जो सही वेद मार्ग है वह बतला कर असहाय और भोली जनता का उद्धार कर। मैं दक्षिणा में तेरा जीवन चाहता हूँ। दयानन्द ने कहा गुरू जी ऐसा ही होगा और गुरू जी के चरण छूकर वहां से निकल कर अपने कार्य क्षेत्र में कूद पड़े।

दयानन्द बारह वर्षो तक देश के कोने-कोने में घूमें, वन और जंगलों को छाना, पहाड़ और घाटियों को लांघा, नदी और नालों को पार किया, भूखे प्यासे रह कर अनेकों दुखों व कष्टों को सहते हुए दयानन्द ने वेदों का प्रचार किया। मूर्ति पूजा, अवतारवाद, गंगा स्नान से पापों की निवृत्ति, तीर्थ दर्शन से मुक्ति, फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, गण्डे-ताबीज, शगुन-अपशगुन आदि अंधविश्वासों का खण्डन अपने उपदेशों,भाषणों तथा शास्त्रार्थो द्वारा किया। अनेक ग्रंथों को लिखकर वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराया। इन कार्यो में महर्षि को विरोधियों द्वारा गालियां खानी पड़ी, ईंट पत्थर खाये, जहर पिलाया गया, अपमान सहना पड़ा। इस सब को सहते हुए इतना अधिक प्रयास करने के बाद देश में कुछ वेद ज्ञान का प्रकाश हुआ और देश में कुछ जागृति आई। इसके बाद स्वामी जी ने चैत सुदी 1 सम्वत् 1432 तद्नुसार सन् 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना इस उद्देश्य से की कि मेरे चले जाने के बाद यह आर्य समाज, वेद प्रचार द्वारा मेरे अधूरे कार्यो को पूरा करती रहेगी। स्वामी जी 30 अक्टूबर 1883 दीपावली के दिन अजमेर में मोक्ष गामी हो गये। उनकी मृत्यु के बाद आर्य समाज ने लगभग 60 वर्षो तक तो बहुत अधिक काम किया जिसका असर सरकार व जनता पर बहुत अधिक पड़ा परंतु बाद में कुछ शिथिलता जरूर आ गई। फिर भी आर्य समाज वेद प्रचार, परोपकारी कार्य, विद्या प्रसारण, तथा शुद्धि आदि कार्य काफी कर रही है। ईश्वर आर्य जनों को ऐसी शक्ति देता रहे जिससे वे महर्षि के कार्यो को आगे बढ़ाते रहे और महर्षि के सपनों को साकार करते रहें।

मेरा अन्य धर्मावलम्बियों से भी निवेदन है कि वे आर्य समाज से जुड़कर सत्य क्या हैं? असत्य क्या हैं? जड़ क्या है? चेतन क्या हैं? भगवान क्या हैं? ईश्वर क्या हैं? तथा ईश्वर, जीव, प्रकृति के भेद को जाने और वेद ज्ञान को प्राप्त करके अपने जीवन को वेदानुकूल चला कर यानि शुभ कार्यो से करते हुए अष्टांग योग से यम नियमों का पालन करते हुए समाधि तक पहुँचकर मोक्षगामी बनें। यही जीवन का अंतिम लक्ष्य हैं जिसकों पाने के लिए ईश्वर जीव को धरती पर भेजता हैं। जीव मनुष्य योनि में ही आकर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। जो वेद मार्ग पर चलने से ही मिलना संभव है। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो वेद मार्ग पर चलने की शिक्षा देती है, इसलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए आर्य समाज से जुड़ना जरूरी है, अन्यथा जीव को आवागमन के चक्कर में ही घूमना पड़ेगा।

वेदों में इतिहास नहीं है।

चूँकि वेद सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान है, इसलिए वेदों में लौकिक इतिहास सम्भव नहीं हैं। वेदों में जो लौकिक इतिहास भासित होता है उसके दो कारण हैं, पहला कारण तो यह है कि वेदों के शब्दों को लेकर ही संसार के मनुष्यों एवं पदार्थो का नामकरण किया गया, जैसा कि मनु का यह कथन है - सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्। वेद शब्देभ्यः एवादौ पृथक् संस्था च निर्ममे।। मनु. (1/21)

अर्थात् आदि में वेद के शब्दों को लेकर ही सभी पदार्थो के नाम एवं कर्म की पृथक पृथक संज्ञा दी गयी। इसलिए यदि वेदों में किसी व्यक्ति या नदी आदि का नाम दिखता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि उस व्यक्ति या नदी आदि का इतिहास उसमें लिखा है, बल्कि उससे यह ध्वनित होता है कि वेदों के उन शब्दों से व्यक्ति या नदी आदि का नामकरण किया गया है। उदाहरण के लिए मेरा नाम सूर्य है और वेदों में भी सूर्य शब्द है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मेरा इतिहास वेदों में है, बल्कि यह अर्थ है कि वेद के सूर्य शब्द को लेकर मेरा नामकरण किया गया है। ऐसा ही सर्वत्र समझना चाहिए। इस सम्बन्ध में वेद भी यही कहते हैं- ''देवो देवानाम् गुह्यानि नामाऽऽविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे (ऋ 9/95/2) अर्थात् परमात्मा ने भूमि आदि की उत्पत्ति के साथ-साथ लोक में उनके सारे नाम प्रकट किए। मीमांसकों के इस कथन 'य एव लौकिकास्स्र एवं वैदिकाः' का तात्पर्य भी यही है लोक में जो प्रचलित शब्द हैं, वेदों से आए हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि वैदिक शब्दों की आनुपूर्वी नित्य होती है और वे अर्थ की दृष्टि से व्यापक होते है, जबकि लौकिक शब्दों की अनुपूर्वी अनित्य होती है वे संकुचित अर्थ में होते हैं। उदाहरण के लिए वैदिक शब्द अश्व एवं अप्सरा लोक में भी प्रचलित हैं। लौकिक शब्द अश्व से जहां घोड़ा नामक पशु का ही बोध होता है वहीं वैदिक शब्द अश्व 'आशु गच्छति इति अश्वः के अनुसार विद्युत, किरण, घोड़ा, यान आदि सभी शीघ्रगामी पदार्थो का भी बोध होता है, इसी तरह लौकिक शब्द अप्सारा से जहां केवल नृत्यांगना का बोध होता है, वहीं वैदिक शब्द 'अप्सु सरन्ति 'इति अप्सर विद्युत के अनुसार जल में संचरण करने वाली विद्युत का बोध कराने के साथ ही प्रकरण के अनुसार जल में संचरण करने वाले अन्य पदार्थो का भी बोध करा जाता है। इस तरह वेदों में आगत शब्दों के बारे में जो व्यक्ति इस तथ्य को समझ लेता है वह वेदों में इतिहास खोजने में अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाएगा।

वेदों में इतिहास भासित होने का दूसरा कारण यह है कि वेद के शब्दों को रूढ़ि मान लिया जाता है, जबकि वे यौगिक या योगरूढ़ होते है, रूढ़ि नहीं। यौगिक का अर्थ यह है कि किसी शब्द के मूल धातु के अर्थ के आधार पर व्युत्पत्ति परक उस शब्द का अर्थ लिया जायेगा, केवल शब्द के वाह्य स्वरूप को देखकर नहीं। जिस प्रकार किसी फल को देखकर उसके मिठास या खटास का ज्ञान नहीं हो पाता है उसे छीलकर, काटकर एवं खाकर ही उसके गुणों को जाना जा सकता है, उसी प्रकार किसी शब्द के अन्दर तक पहुँचे बिना उस शब्द का सही अर्थ नहीं जाना जा सकता है। चूँकि वेद के प्रत्येक शब्द का अर्थ उस शब्द के अन्दर ही निहित है, इसलिए शब्द के अन्दर घुसकर ही उस शब्द का यथार्थ ज्ञान किया जा सकता है। शब्दों के अन्दर प्रवेश करके वैदिक शब्दों के अर्थ जानने की यही प्रक्रिया यौगिक प्रक्रिया कहलाती है। पतंजलि, यास्क, वररूचि, आचार्य कुमारिल भट्ट, शौनक आदि प्राचीन ऋषियों एवं वेदज्ञ विद्वानों ने इस यौगिक प्रक्रिया को स्वीकार किया है। इसलिए यह कोई नवीन पद्धति नहीं, बल्कि वेदार्थ जानने के लिए प्राचीन विधि है। सायणाचार्य ने भी वेदों के शब्दों को यौगिक ही माना है, परंतु वेदार्थ करते समय वे इस तथ्य को विस्मृत करके वेदों में अनित्य इतिहास वर्णन दिखलाए हैं। आज के अधिकांश विद्वान सायणाचार्य को प्रमाण मानकर वेदों में अनित्य इतिहास मानते या खोजते हैं, जो कि गलत है। यदि हम वेदों के शब्दों को प्राचीन ऋषियों की तरह यौगिक मान लेते हैं तो वेदों में अनित्य इतिहास होने का विवाद स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

सूर्य देव चौधरी
झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, राँची

thearyasamaj.org

अनुलोम विलोम से आता है व्यक्तित्व में संतुलन

आर्य समाज विज्ञाननगर कोटा में आयोजित योग प्राणायाम शिविर में आज मुख्य अतिथि कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आर.के.तंवर ने कैंसर के रोकथाम में योग के महत्व की चर्चा की। योग में प्राणायाम के द्वारा शरीर की प्रत्येक कोशिका को शुद्ध करके प्राणवायु की आपूर्ति की जाती है। इसी प्राणवायु के द्वारा कोशिका को संभावित संक्रमण से मुक्त किया जा सकता है और प्राणायाम के माध्यम से क्षतिग्रस्त कोशिका की विकृति का निदान होने से अन्य कोशिकाओं में रोग नहीं फैल पाता है।

इसके अतिरिक्त उचित खानपान एवं व्यायाम भी आवश्यक रूप से कैंसर के बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

गुरूजनों से प्राप्त करें संस्कार

अन्नपूर्णा पब्लिक स्कूल, कोटा में प्रवेशोत्सव पर आर्य समाज कोटा द्वारा आयोजित यज्ञ में अरविन्द पाण्डेय के पौरोहित्य में मुख्य यजमान विद्यालय के निदेशक डॉ. रामाराव, प्राचार्या श्रीमति लक्ष्मीराव सहित अध्यापक, अध्यापिकाओं तथा बालक-बालिकाओं ने गायत्री मंत्र से आहुति देकर ईश्वर से श्रेष्ठ बुद्धि की कामना की।

अरविन्द पाण्डेय
प्रचार एवं कार्यालय सचिव

यज्ञ धर्म की पहली सीढ़ी है

यज्ञ करना धर्म की पहली सीढ़ी है यह बात आचार्य अग्निमित्र ने 30 मार्च को आर्यसमाज गायत्री विहार द्वारा बजरंग नगर कोटा में ''आओ यज्ञ करें'' अभियान में आयोजित पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग के अवसर पर कही।

अरविन्द पाण्डेय
प्रचार एवं कार्यालय सचिव

प्रतिभावान जरूरतमंद बच्चों के लिए आर्य समाज ने दी शिक्षा सामग्री
दैनिक भाष्कर के मिशन शिक्षा अभियान में किया सहयोग

जरूरतमंद एवं प्रतिभावान छात्रों को शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दैनिक समाचार पत्र दैनिक भाष्कर द्वारा चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत आर्य समाज कोटा ने सहयोग देकर अपनी जिम्मेदारी निभाई। इसके अन्तर्गत आर्य समाज कोटा ने जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दैनिक भाष्कर कार्यालय कोटा में जाकर शिक्षण सामग्री भेंट की।

इस अवसर पर आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि सभी को शिक्षा मिले। इसी उद्देश्य से आर्य समाज द्वारा विगत कई वर्षो से कोटा शहर के सरकारी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अनेक सरकारी विद्यालयों में जाकर जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इसी प्रकार शिक्षण सामग्री दी जा रही है।

अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव

योगनिद्रा से मिलती है तनाव से मुक्ति
आर्य समाज विज्ञान नगर का साधना एवं ध्यान योग शिविर

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में चल रहे साधना एवं ध्यान योग शिविर में मुख्य योग प्रशिक्षक अरविंद पाण्डेय ने साधकों को योग निद्रा का क्रियात्मक अभ्यास कराया। अभ्यास के दौरान उन्होंन साधकों को इसके लाभ से अवगत कराते हुए बताया कि योग से मन मस्तिष्क एवं आत्मा को पूर्ण विश्राम, शक्ति, उत्साह एवं आनंद मिलता है। मानसिक तनाव से बचने की यह सर्वोत्तम विधि है।

राकेश चड्ढ़ा,मंत्री, आर्य समाज विज्ञान नगर

ध्यान से मन होता है अन्तर्मुखी
आर्य समाज विज्ञान नगर का साधना एवं ध्यान योग शिविर

ध्यान से मन होता है अन्तर्मुखी। यह बात ध्यान योग विशेषज्ञ श्री अरंविद पाण्डेय ने आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में आयोजित शिविर में विभिन्न ध्यान मुद्राओं के माध्यम से मन को अंतर्मुखी बनाने की विधियों के क्रियात्मक अभ्यास के अवसर पर कही। उन्होंने साधकों से कहा कि मन की वृत्तियों पर नियंत्रण से काम, क्रोध, मद, मोह एवं अहंकार आदि दुष्प्रवृत्तियों को दूर किया जा सकता है।

राकेश चड्ढ़ा, मंत्री, आर्य समाज विज्ञान नगर

पृष्ठ.....5 का शेष

नियमित दिनचर्या से स्वास्थ्य को सुरक्षित रखा। आसन प्रणायाम के प्रति आपकी विशेष अभिरूचि रही। आप आसन और प्राणायाम के नियम को यात्रा में भी समय पर करना नहीं भूलते थे। जब स्वामी जी ने ततारपुर में गुरूकुल प्रारम्भ ही किया था, मात्र आश्रम-तपोभूमि के रूप में स्वामी जी ने केन्द्र बनाया था। उसी कार्यकाल में लगभग वर्ष 1963-64 की बात है स्वामी जी प्रातः चार बजे ही घंटी बजा दिया करते थे। उस समय पूरे ग्राम का जागरण हो जाता था। हम उठकर शौचादि से निवृत्त होकर जब आश्रम में प्रवेश करते थे तो स्वामी जी सामूहिक सन्ध्या करते थे। बाद में छात्र स्कूल में पढ़ने के लिए चले जाते। तत्पश्चात् ग्राम की माताएं पढ़ने के लिए आती थीं और सायंकाल ग्राम से युवक और प्रौढ़ आकर खेलकूद एवं व्यायाम करते थे। सारे ग्राम की सामूहिक संध्या होती थी। रात्रि में पाठशाला चलाते थे जिसमें प्रौढ़ व्यक्तियों को अक्षर अभ्यास एवं धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। मैं मानता हूँ कि यदि इस प्रकार आर्य सन्यासी ग्रामों में बैठकर निर्माण प्रारम्भ कर दे तो थोड़े ही समय में वैदिक परम्परा स्थापित हो सकती है। स्वामी जी दूरदर्शी-पारदर्शी- सूक्ष्मदर्शी विद्वान थे और आर्य जगत् की शान थे। स्वामी जी दृढ़ संकल्प लेकर जिस कार्य को प्रारम्भ कर देते थे उसे पूर्ण ही करते थे। अनेक उदाहरण आपके जीवन के हैं जिन्हें पढ़कर आप वैदिक धर्म के दीवाने ऋषिवर के सेनानी के प्रति नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकते। बहुत समय पूर्व की घटना है कि आपकों रिवाड़ी के पास किसी ग्राम में संस्कार कराना था और अगले दिन प्रातः स्याना आर्य समाज का वार्षिक सम्मेलन था। उसमें प्रातः यज्ञ आपकी ही अध्यक्षता में होना था। रात्रि को ठीक समय पर जैसे ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ भारी वर्षा होने लगी। ग्राम के आस पास पानी भर गया। स्वामी जी ने कहा मुझे जरूर जाना है। सवारी की व्यवस्था ऐसे में कैसे होती? तब संकल्पों के धनी स्वामी जी वस्त्रों को सिर पर रखकर पानी में घुस गये और रात को कई किलोमीटर चलकर मुख्य मार्ग पर आये। रात को किसी ट्रक की सवारी दिल्ली तक मिली, दिल्ली से मुरादाबाद वाली रेल में बैठकर गढ़मुक्तेश्वर 6 बजे उतर गये और बस द्वारा ठीक समय पर स्याना में उपस्थित हो गये। तब भी धीरे धीरे वर्षा हो रही थी। लोग निराश थे कि ऐसे में इतनी दूर से स्वामी जी कैसे आ सकते हैं, लेकिन महर्षि दयानन्द के सिपाही धुन के धनी आर्य समाज के प्रति समर्पित सन्यासी ने सम्मेलन की सफलता द्वारा सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। आर्य समाज ततारपुर का वार्षिक उत्सव था। स्वामी जी गाजियाबाद सन्यास आश्रम से आये थे। रात्रि को समापन पर बोले-प्रातःकाल 6 बजे पहली बस द्वारा निकल जाऊँगा। मंत्री जी ने कहा-ठीक है स्वामी जी हम प्रातः गुरूकुल के लिए आपको विदा करेंगे। सभी घर जाकर सो गये। प्रातः विलम्ब से उठे। स्वामी जी ने समय पर उठकर स्नान किया और दण्ड कमण्डल लेकर निकल गये। जब मंत्री जी को पता चला कि स्वामी जी बिना दक्षिणा के ही प्रातः निकल गये तो बड़ा पश्चाताप किया और वहां जाकर स्वामी जी से क्षमा याचना की। स्वामी जी ने कहा- अपने आर्यत्व की रक्षा करनी है तो अपनी दिनचर्या को सुधारो। इनकी दिनचर्या समयबद्ध थी, भोजन भी समय पर लेते थे, अपनी दिनचर्या में व्यवधान नहीं होने देते थे। विश्व जागृति मिशन के संस्थापक आचार्य यशपाल जी सुधांशु आपके प्रति बहुत श्रद्धा रखते थे। उन्हें पता चला कि आप अस्वस्थ चल रहे हैं तो अस्पताल में मिलने के लिए आये और स्वामी जी से आशीर्वाद लिया। वैदिक विद्वान स्वामी दीक्षानन्द जी आपसे शंका समाधान करने आते तो चरण-वन्दना कर आशीर्वाद लेते थे। सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध जी ने गुरूकुल पूठ के सम्मेलन पर जब आपसे चरण छूकर आशीर्वाद लिया तो वह दृश्य ऐसा था कि जैसे वैदिक युग आज साक्षात् गंगा किनारे गुरूकुल पूठ में ही उतर आया हो। ईजानाः स्वर्गयन्ति लोकम् (यज्ञशील मनुष्य मोक्ष पाते हैं।)

thearyasamaj.org

Name ....
6 OCT 2014
SCANNED

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४५६८११५१६, मंत्री-०६६१६२६७६६६, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com ९

सेवा में,

....

....

....

अन्तर्निहित आनंद की अनुभूति का साधन है ध्यान योग
साधकों ने लिया नित्य संध्या एवं ध्यान योग करने का संकल्प

7 दिवसीय साधना, ध्यान योग शिविर का समारोह पूर्वक सम्पन्न

शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति का सर्वोत्तम साधन ध्यान एवं योग ही है। इससे मन के विकार दूर होते हैं तथा अन्तर्निहित आनंद की अनुभूति होती है। उक्त विचार आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा में विगत एक सप्ताह से चल रहे साधना एवं ध्यान योग शिविर के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अमरोहा उत्तर प्रदेश से पधारी डा. दीना रस्तोगी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में महिलाओं में साधना और ध्यान योग की ओर रूझान बढ़ा है यह अच्छा संकेत है।

राकेश चड्ढ़ा

गोविन्दधाम में अमावस्या यज्ञ

आज गोविन्दधाम किशोरपुरा कोटा में अमावस्या यज्ञ आर्य पुरोहित श्योराज वशिष्ठ के पौरोहित्य में हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढ़ा थे।

राकेश चड्ढ़ा

"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत"

जीवन जीना एक कला है, जिसे न जीना आता।
वह पुनि पुनि मरता रहता, मर मर पुनि पुनि जन्माता।।
जिसने कला सीख ली, जीवन उसे उदात्त बनाता।
उसका जीवन जीवन दाता से उसको मिलवाता।।
और मृत्यु, मृत्यु न रहकर, मृत्यु पार ले जाती।
आदि अन्त से परे, शाश्वत सुख को प्राप्त कराती।।
ऐसा जीवन जियो कि जीवन इक उत्सव बन जाये।
एक मधुर संगीत जगति में, जो आनन्द सरसाये।।
सहज पक्व खरबूजे सम, तन लतिका से विलगायें।
जो मृत्यु भी महक उठे, सुरभित अग-जग कर जाये।।
वाह्य व्यक्ति, वस्तु स्थिति से चाह रहे सुख पाना।
तो प्रयास ये नासमझी है, भ्रान्ति मूल बचकाना।।
सबके भीतर भरा पड़ा है, सुख का अमित खजाना।
कला सीख लो जिससे हो उसका प्रगटाना पाना।।
सुख बांटे से सुख मिलता, दुख देने से दुख आता।
जस व्यवहार अन्य संग करते, तस उनसे मिल पाता।।
जैसी क्रिया प्रतिक्रिया वैसी, ध्वनि जैसी ही प्रतिध्वनि।
यहाँ प्राप्त होती अकाट्य है प्रकृति की ये नियमनि।।
जो अन्यों को दुख देवे अरू खुद चाहे सुख पाना।
उसका दुख की लपटों से संभव ही नहि बच पाना।।
क्षेम-प्रेम आनन्द अभय जो सबको देता रहता।
वह अनंत आनन्द अभय सुख आदर पाता रहता।।
जैसा अन्यों से अपने प्रति हम व्यवहार न चाहें।
वैसा हम भी अन्यों के प्रति नहि व्यवहार बनायें।

दयाशंकर गोयल, इंदौर

श्री वेगराज जी दिवंगत

आर्य समाज के उच्च कोटि के भजनोपदेशक श्रीमान् वेगराज आर्य जी का देहावसान गत दिनो हो गया, स्व. श्री वेगराज जी प्रखर वक्ता, सुमधुर कुशल संगीतज्ञ थे। वे कुँवर सुखलाल जी मुसाफिर, पं. प्रकाश चन्द्र जी कविरत्न आदि की परम्परा के श्रेष्ठ उदार आर्य भजनोपदेशक थे।

श्री वेगराज जी वर्षो आर्य भजनोपदेशक समिति के अध्यक्ष रहे। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सदगति एवं परिवार मित्र सभी को यह दुख सहने की शक्ति व मनः शान्ति प्रदान करें।

सत्यपाल सरल
आर्य भजनोपदेशक, देहरादून

वहां वर्षा नही होती

हुई आकाशवाणी कल जगाने को धरा सोती।
जहाँ गौवंश कटता है, वहाँ वर्षा नहीं होती।
हमीं ने वायुमण्डल को विषैला कर दिया यानी।
असीमित खर्च कर डाला धरा से खींचकर पानी।
सघन वन काट डाले, कर दिये नंगे सभी पर्वत
सकल भूमि हुई बंजर, जो सदियों से रही धानी।
जहाँ गरिमा गगन की नष्ट होती है परीक्षण में
वहाँ बादल नहीं होते, वहां वर्षा नहीं होती।
जहां राजा प्रजा से भेद का व्यवहार करता है
घुटालों का समूचा देश ही व्यापार करता है
समान आचार की जब संहिता लागू नहीं होती
जहाँ सम्बन्ध ही सम्बन्ध से व्यभिचार करता है।
हमीं जब संस्कृति के साथ में, खिलवाड़ करते हैं।
अमर्यादित जहां नारी, वहाँ वर्षा नहीं होती।
जहाँ हर बात में छल हो, प्रदूषण हर तरफ फैला।
जहां गंगा में डाला जा रहा हो, गन्दगी मैला।
जहाँ फैक्ट्री का कचरा मिल रहा हो मित्र नदियों में
सभाओं में जहाँ पर नृत्य करती नग्नता लैला।
जहाँ पर लाज लुटती है, जहाँ अपहरण होते हैं।
प्रदूषित हो जहाँ गंगा, वहाँ वर्षा नहीं होती।
जहाँ पर न्याय को दर-दर भटकता है दुखी निर्बल।
दबंगों को जहाँ देते समर्थन, राजनीतिक दल।
जहाँ कानून में कानून का पालन नहीं होता।
जहाँ कीचड़ में घोटालों की हो दल-बदल की दलदल।
जहाँ पर न्याय को अन्याय का अजगर निगलता है।
वहाँ गर न्याय बिकता है वहाँ वर्षा नहीं होती।
यहाँ जनता भी शायद धर्म पर स्थिर नहीं अपने।
यहाँ पर टूटते हैं नौजवानों के सभी सपने।
यहाँ तुष्टिकरण है एक को, दूजे को आरक्षण।
पुजारी बन के बैठा चोर भी माला लगे जपने।
जहाँ आतंकियों की सजा के बदले सुरक्षा हो
पुजारी हो नराधम तो, वहाँ वर्षा नहीं होती।

-हितेश कुमार शर्मा
बिजनौर

निर्वाचन
आर्य समाज लालबाग, लखनऊ

प्रधान - श्री मनीष आर्य
मंत्री - डा. मोहन लाल अग्रवाल
कोषाध्यक्ष- श्री सुनील कुमार मल्होत्रा

शोक सन्देश

आर्य समाज, राधाकुण्ड गोण्डा के वरिष्ठ सदस्य श्री विशम्भर दत्त शुक्ल का निधन 10-11/8/2014 की रात्रि में हो गया है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सदगति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति व धैर्य प्रदान करें।

-राम मनोहर पाण्डेय, मंत्री

स्वामी—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक—आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक—श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5—मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है—सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।